



नारी सशक्तिकरण

डा. सुदेश कुमारी, हिन्दी प्राध्यापिका

महिला कहो या नारी—इस नाम का जब भी जिक्र आता है तो अनेकों मुद्दे उभरकर सामने आ खड़े होते हैं। आज हर तरफ से आवाजें आ रही हैं कि नारी को शक्तिशाली कैसे बनाया जाए लेकिन यदि हम उन महिलाओं की तरफ एक दृष्टि दौड़ा कर देखें जिन्होंने ऊँचे मुकाम को हासिल किया है तो हम अपने आप ही समझ जाएंगे कि उसे शक्तिशाली बनाने की कोई जरूरत नहीं है, वह तो स्वयं ही शक्ति से भरपूर है और समय आने पर उसने हर क्षेत्र में इस शक्ति का, अपनी हिम्मत और साहस का परिचय भी दिया है। चरम सीमा पर पहुंची हुई ये औरतें अपने जीवन में अनुशासन को अपनाते हुए, संयम से काम लेते हुए और नियमों का पालन करते हुए इस शिखर को छू पाई हैं, क्योंकि ये तीन ऐसे मंत्र हैं जिनके बल पर व्यक्ति मरुस्थल में भी फूल खिला सकता है:-

ISSN : 2348-5612 © URR



“अनुशासन, संयम, नियम

है विकास के मूल

इसके बल पर ही खिले, मरुस्थल में भी फूल”¹

8 मार्च करीब आते ही हर तरफ भाषणों की तैयारी, सेमीनारों का दौर और अखबारों व मीडिया द्वारा एक से बढ़कर एक तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं और खूब भड़कीले भाषण व टिप्पणियों के द्वारा औरत नाम के जन्तु में जोश भरने की कोशिश की जाती है। यह बात हम सभी मानते हैं कि भारत में औरत की स्थिति दुःखद है इस बारे में अलका सरावगी अपने विचार प्रकट करती हुई कहती हैं कि अब स्त्रियाँ नौकरी कर रही हैं, आत्मनिर्भर हो रही हैं और जीवन साथी भी खुद चुन रही हैं। अपने आत्मसम्मान और आजादी को तरजीह देती ये औरत गौरव का एहसास कराती है, लेकिन एक चीज का खतरा हमेशा मौजूद रहता है वो है विध्वंस की ओर ले जाता नारीवाद।

भारत में औरत की स्थिति माना की काफी कष्टदायक है, लेकिन उसका विकल्प पश्चिम का नारीवाद मॉडल भी नहीं हो सकता है। आत्मनिर्भर होना अच्छा है लेकिन बहुत शिद्यत से लगता है कि एक स्त्री के लिए माँ होना, पत्नी होना भी उतना ही जरूरी है। हमारी लड़ाई बेहतरी के लिए है, प्रकृति के खिलाफ जाने के लिए नहीं। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के बगैर अधूरे हैं परिवार संस्था को तोड़ने वाला पश्चिम का मॉडल प्रकृति के विरुद्ध है। इसलिए आजादी के चक्कर में हमें ऐसी विध्वंसकारी राह भी नहीं चुननी है।

यह आज के समय की मांग है कि औरत काम करने के लिए बाहर निकली है। बदलाव जिन भी कारणों से हुआ हो, लेकिन इन्होंने पारम्परिक समाज के मूल्यों को तो हिलाया ही है। हमें पुरुष समाज से लड़कर नहीं, उन्हें साथ लेकर और उनकी सोच को बदलते हुए अपने लिए इस दुनिया में जगह बनानी है क्योंकि विध्वंसकारी विचार सिर्फ और सिर्फ विनाश करते हैं निर्माण नहीं। अगर हमें निर्माण करना है तो सिर्फ अधिकारों के बारे में नहीं बल्कि कर्तव्यों पर भी विचार करना होगा। अगर हम अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा के साथ निभाते हैं तो हमें अपने अधिकार बिना मांगे मिल जाएंगे। हमारे रास्ते में कितनी ही मुसीबतें आती रहें लेकिन उनसे हमें कुछ न कुछ सीख लेकर आगे बढ़ते जाना चाहिए क्योंकि हर कठिनाई हमारे अन्दर एक नए प्रकार का जोश भर देती है।

“सुनिये मेरे शब्द, कर

गहराई से गौर

हर बाधा ने भर दिया, मुझमे साहस और”²

औरत या फिर कहें कि लड़की को यदि अच्छी शिक्षा दिलवाई जाए, उसे आत्मनिर्भर बनाया जाए तो 90 प्रतिशत समस्याएं तो जैसे ही खत्म हो जाएगी, क्योंकि शादि में दिए गए वस्त्र या आभूषण से ज्यादा शिक्षा ही उसके मार्ग को ज्यादा प्रशस्त करेगी और शिक्षा के बल पर ही उसके अन्दर अच्छे गुणों का संचार होगा और जिससे वह एक श्रेष्ठ नागरिक बनेगी। डा बलजीत सिंह ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है कि-



“कन्या को दें या न दें,
वस्त्राभूषण, हार
शिक्षा—दीक्षा दें उसे, सद्गुण, सद्ब्यवहार।”

जब हम स्त्रियों के अन्दर इस प्रकार के विचार आ जाएंगे तो हम अपनी आने वाली पीढ़ी को भी लालच से उबारकर स्वयं को ऊपर उठाने तथा आत्मनिर्भर बनाने में सफल हो पाएंगे। हमें बच्चों के अन्दर या फिर ये कहे लड़कियों के स्वभाव में इस तरह के गुणों का संचार करना होगा जिससे वे स्वयं कमाएं तथा किसी दूसरे का मूँह ना ताकें, जिससे उनकी जीवन शैली में सुधार होगा और घर में होने वाले 75 प्रतिशत लड़ाई—झगड़े बन्द हो जाएंगे। क्योंकि—

“शिक्षा दो संतान को,
मत दो धन की भीख,
गुड़ मत दो, दे दो उन्हें गुड़ की जननी ईख।”³

अगर इस तरह हमने अपनी संतान के अन्दर गुणों का संचार किया है तो समाज में उसे किसी से भय खाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस संसार में रहकर उसे किसी का दास बनने की आवश्यकता नहीं होगी और वह सभी प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बनाने में सक्षम होगी।

“जग में रहिए, किन्तु मत
बनिये जग के दास
सभी दशाएं आपको, आ जाएगी रास।”⁴

कुछ स्त्रियां ऐसी भी हैं जो हमेशा चिंताग्रस्त रहती हैं, लेकिन चिंता की जड़ तक पहुँचकर उसे सुलझाने का प्रयास नहीं करती और इसी तरह चिंता में डूबी हुई अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो जाती हैं। उन्हें इस बात को समझना होगा कि चिंता किसी बात का समाधान नहीं है। चिंता तो चिंता के समान होती है जो व्यक्ति के शरीर को घुन की तरह थोड़ा—थोड़ा करके समाप्त कर देती है। अगर हमें चिंता से मुक्ति प्राप्त करनी है तो हम सब को अपने जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित करना होगा और उसे परिश्रम के साथ अंजाम तक पहुँचाना होगा, ताकि जीवन में बहार आ सके।

“चिंता से मिटता नहीं
चिंता का आधार
ध्येयपूर्ण श्रम से बने, जीवन सदाबहार।”⁵

आज के युग में काफी संस्थाएं उठ खड़ी हुई हैं। बहुत से ज्ञानी—ध्यानी लोग महिलाओं की समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश में जुटे हुए हैं और काफी नियम कानून भी बनाए गए हैं लेकिन समाज में कितनी प्रतिशत महिलाएं हैं जिन्हें इन नियमों व कानूनों का पता हो। लता खण्डेलवाल ने दैनिक भास्कर में प्रकाशित अपने लेख के माध्यम से बताया है कि “सूरज पुरुषों से तो क्या महिलाओं से भी खुलकर बात नहीं कर पाती। उसके आगे स्त्री—पुरुष की बराबरी के अधिकार के दायरे ढेर हो गए हैं।¹⁴ साल पहले जब वह ब्याह कर इस गाँव में आई तब से इस मकान की चार दीवार के बाहर नहीं निकली। इतने सालों में उसने अपना गाँव भी पूरा नहीं देखा है” ये हालात हैं मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से 30—35 किलोमीटर दूर गैरतगंज तहसील, के रामखेड़ी गाँव की। सरजू जैसी कितनी ही महिलाएं हैं जिन्हें अपने अधिकारों के बारे में कुछ नहीं पता। उनकी हालत आज भी वही है जो पहले हुआ करती थी। आज भी ये स्त्रियाँ अत्याचारों को सहन कर रही हैं और परिवार वालों को पता ही नहीं कि वे अत्याचार कर रहे हैं। आधुनिक क्रान्ति युग में भी इनके दुःख जस—के—तस बने हुए हैं।

“मार—मार झक थक गए,
अनगिन संत, महंत
जग जो कल था आज है, हुआ न दुःख का अंत।”⁶

ऐसी स्त्रियाँ जो अपने स्वास्थ्य की तरफ ध्यान नहीं देती और न ही पौष्टिक आहार लेती हैं उनका शरीर अनेक रोगों से पीड़ित रहता है और मन हमेशा बेचैन बना रहता है। ऐसी अवस्था में इनके चेहरे से मुस्कान लुप्त हो जाती है और यह जीवन एक शाप बनकर रह जाता है।



“तन रोगी, मन व्यग्र है
लुप्त हुई मुस्कान
मानव का जीवन नहीं लगा मुझे वरदान।”¹⁰

इन सब परिस्थितियों पर दृष्टिपात करने के बाद जब 8 मार्च को नारी शब्द की हर तरफ से सजा-धजा कर शव यात्रा निकाली जाती है तो मुझे बहुत हैरानी होती है। मैंने इसे शव यात्रा इसलिए कहा क्योंकि जीना तो प्रतिदिन का होता है और एक दिन तो सिर्फ शव का ही होता है।

“8 मार्च आया,
महिला दिवस को संग-संग लाया।
चारों और धूम मची है,
हर तरफ भाषणों की महफिल सजी है।
कहीं महिला सम्मेलन तो,
कहीं आरक्षण के लिए अड़ी है।

लेकिन 90 प्रतिशत महिलाओं को,
ये नहीं पता कि ये कौन-सी बीमारी बड़ी है।
चाहे अखबार या फिर मीडिया
हर तरफ समाचारों में बिटिया ही बिटिया
कैसे इसे उबारें, कैसे इसे संवारें,
हर तरह से दिमाग पर जोर दिया गया
असली समस्या क्या थी
इसे ओर ध्यान न गया
सब दिशाओं से आवाज आई
बेचारी, अबला, सताई गई नारी
लेकिन संसद में आरक्षण का, सबसे पहले
विरोध करती पाई गई नारी
क्या माया, क्या ममता
सबके चेहरों पर शिकन की लकीरें पाई।

लेकिन मुख्य समस्या है
इसे जन्म तो लेने दो मेरे भाई।
किरण बेदी, कल्पना चावला।
या फिर हो इन्दिरा गाँधी
अगर ये जन्म न लेती,
तो आज ये उदाहरण बनकर
हमारे सामने न आती
सरकार ने कानून बनाने में कोई कमी न छोड़ी।

लेकिन त्रासदी देखो जब उनके घर में बेटी हुई,
मातम मनाने अफसोस जताने, सारी रिश्तेदारी दौड़ी।”¹¹

हरियाणा सरकार द्वारा राज्य में महिलाओं व बालिकाओं के विकास, सशक्तिकरण एवं कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं लागू की गई हैं, जिनमें से कुछ योजनाओं के आंकड़े इस प्रकार हैं:-



1. कन्या भ्रूणहत्या की समस्या से निपटने एवं राज्य में गिरते लिंग अनुपात को रोकने के लिए **लाडली योजना** के अन्तर्गत परिवार में जन्मी दूसरी बालिका के नाम 5000/- रुपये की राशि 5 वर्ष तक निवेश की जाती है, जो उसको 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर तथा विवाहित रहने पर ब्याज सहित लगभग 1 लाख रुपये की राशि दी जाएगी। अब तक लाडली योजना के अन्तर्गत 86820 परिवार लाभान्वित हुए हैं। इस योजना को अगले पाँच वर्ष तक बढ़ा दिया गया है।
2. **लाडली सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना** – इसके तहत उन माता-पिता जिनकी केवल दो लड़कियाँ हैं को 45 वर्ष की आयु करने पर 500/- रुपये प्रति मास पेंशन।
3. **इंदिरा गाँधी प्रियदर्शनी विवाह शगुन योजना** – इसके तहत अनुसूचित जाति के परिवारों और सभी वर्गों की विधवाओं को उनकी लड़की की शादी के समय 31000/- रुपये तथा गरीबी रेखा से नीचे रह रहे समाज के अन्य सभी वर्गों के परिवारों को 11000/- रुपये।
4. शिक्षा ऋण योजना – हरियाणा महिला विकास निगम के माध्यम से लागू की जा रही है, जिसके अन्तर्गत बालिकाओं को व्यवसायिक एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु ब्याज में 5 प्रतिशत सबसीडी दी जाती है। इस स्कीम के अन्तर्गत अब तक विभिन्न बैंकों द्वारा 2547 लड़कियों के ऋण स्वीकृत किए गए।
5. 551 महिला चौपालों के निर्माण के लिए 16.53 करोड़ रु. जारी। यह चौपाल महिला सशक्तिकरण की गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु होगी।
6. महिला के नाम सम्पत्ति के हस्तांतरण पर स्टॉम्प शुल्क में 2 प्रतिशत की छूट।
7. बिजली का घरेलू कनेक्शन महिला के नाम होने पर बिल में 10 पैसे प्रति यूनिट की छूट।
8. 60 वर्ष की महिलाओं को बस किराये में 50 प्रतिशत की छूट।
9. विधवा पेंशन 1000 रुपये से बढ़ाकर 1600 रुपये प्रतिमाह।
10. हरियाणा आवास बोर्ड द्वारा बनाए गए मकानों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण।
11. अध्यापकों की भर्ती में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण।
12. सुरक्षित प्रसूति और स्वच्छ वातावरण प्रदान करने के लिए 510 प्रसूति गृहों का निर्माण।
13. राज्य में महिला लिंग अनुपात में सुधार लाने के लिए प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले जिलों को क्रमशः 5 लाख रुपये तथा 2 लाख रुपये के प्रोत्साहन पुरस्कार।
14. राज्य सरकार की महिला कर्मचारियों को शिशुओं की देखभाल के लिए 2 वर्ष (730 दिन) का अवकाश।

प्रस्तुत शोध-पत्र पर निष्कर्ष निकालने के लिए जीन्द शहर के विभिन्न क्षेत्रों जैसे पटियाला चौक, रेलवे रोड, सैक्टर-11, अर्बन एस्टेट, राम कॉलोनी, डिफेंस कॉलोनी आदि में सर्वे करके विभिन्न स्त्रियों के विचार जाने गए तो एक हैरान कर देने वाली बात सामने आई कि अनपढ़ महिलाओं को तो माना कि महिला दिवस या फिर नारी सशक्तिकरण के बारे में कुछ नहीं पता लेकिन ऐसी औरतें जो पढ़ी-लिखी तो हैं लेकिन जागरूक नहीं इनमें से भी 60 प्रतिशत महिलाओं को उन्हें भी इस विषय में कुछ ज्यादा जानकारी नहीं है। उनका कहना है कि हमें क्या करना है ये दिवस मनाकर इसे मनाने या न मनाने से हमारे जीवन पर कोई असर पड़ने वाला नहीं है इनमें से 90 प्रतिशत महिलाएं तो सारा दिन काम करके सीरीयल देखकर मस्त हैं। वास्तविक जीवन में क्या लक्ष्य निर्धारित करना है और कैसे आत्मनिर्भर बनना है ये सब इनके लिए बेकार का विषय है जिस पर दिमाग खर्च करना ये जरूरी नहीं समझती। लेकिन अन्त में बात कहना चाहूंगी कि अगर स्त्री शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है—

**“शिक्षित यदि होता पुरुष,
शिक्षित होता एक,
नारी यदि शिक्षित हुई, शिक्षित हुए अनेक।”¹³**

संदर्भ-सूची :-

1. डॉ. बलजीत सिंह, इंद्रधनुष के रंग, पृ. सं. 02
2. अलका सरावगी, दैनिक भास्कर, दिनांक 08 मार्च, 2010 पृ. सं. 02
3. डॉ. बलजीत सिंह, इंद्रधनुष के रंग, पृ. सं. 57



4. वही, पृ. सं. 18
5. वही, पृ. सं. 18
6. वही, पृ. सं. 15
7. वही, पृ. सं. 15
8. लता खण्डेलवाल, 8 मार्च, 2010, दैनिक भास्कर, पृ. सं. 02, (14 साल में भी नहीं देख पाई पुरा गाँव)
9. डॉ. बलजीत सिंह पृ. सं. 15
10. वही, पृ. सं. 17
11. डॉ. सुदेश राठी धर्मपत्नी डॉ. राजीव राठी, राठी हस्पताल, पटियाला चौक, हरियाणा
12. शकुन्तला जाखू (वित्तायुक्त एवं प्रधान), सचिव, हरियाणा सरकार, महिला एवं बाल विकास विभाग, एम. पी. बंसल (निदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग) 8 मार्च, 2010, दैनिक भास्कर, पृ. सं. 42
13. डॉ. बलजीत सिंह, इन्द्रधनुष के रंग, पृ. सं. 42